मस्जिद में जाने के शिष्टाचार (2 का भाग 2)

रेटिंग:

विवरण: ???? ???? ?? ???? ???? ??, ?????? ??? ???? ?? ?????? ????? ?? ???? ??? ?? ??? ?? ????????? ?? ?????? ???? ?? ???? ???? ????? ?? ???? ?????????? ?????? ?? ????????

श्रेणी: पाठ › पूजा के कार्य › प्रार्थना

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

- मस्जिद में जाने के 12 अतिरिक्त शिष्टाचार सीखना।

अरबी शब्द:

- *??????* - प्रार्थना स्थल का अरबी शब्द।
- *????* - नमाज़ पढ़ाने वाला।
- *????* - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।
- *????* - मुसलमानों को पांच अनिवार्य प्रार्थनाओं के लिए बुलाने का एक इस्लामी तरीका।
- *????* - पूजा का एक स्वैच्छिक कार्य।
- *????'* - नमाज में झुकने की स्थिति।
- *????* - प्रार्थना की इकाई।
- *????* - सुबह की नमाज।
- *????* - दोपहर की नमाज।

·?????? - कोई आड़ जो व्यक्ति नमाज पढ़ते समय अपने सामने रखता है।

7. अगर व्यक्ति ?????? में प्रवेश करता है और नमाज शुरू हो चुकी है तो उसे उस नमाज के लिए जल्दी नहीं करना चाहिए, क्योंकि पैगंबर ने ऐसा करने से मना किया था। पैगंबर मुहम्मद ने कहा:

"अगर नमाज़ शुरू हो चुकी है, तो भागते हुए उसमें शामिल न हों, बल्कि आराम से चल कर और शांति से शामिल हों, और जितनी नमाज बची है उसे पढ़ें और जो छूट गया है उसकी भरपाई करें।" (???? ??-?????, ???? ???????)

यदि कोई मुसलमान नमाज़ में देर से आता है, तो उसे "अल्लाहु अकबर" कहना चाहिए और समूह में शामिल हो जाना चाहिए। अगर किसी रकअत में रुकू के बाद शामिल होता है, तो नमाज़ के बाद पूरी रकअत दोहराई जानी चाहिए। तो जब इमाम नमाज़ पढ़ा ले तो आपको खड़े होकर छूटी हुई रकअत को पूरा करना चाहिए।

पछिली पंक्ति में शामिल होना और सभी खाली स्थान को भरना उचित है। यदि पंक्ति में कोई जगह नहीं है, तो इमाम के बिलकुल सीध में पीछे नई पंक्ति शुरू करना चाहिए, और उसके बाद आने वाले लोगों को दाएं और बाएं ओर खड़े होना चाहिए। यदि पंक्ति पीछे से शुरू हो तो महिलाओं को सामने एक नई पंक्ति शुरू करनी चाहिए।

8. नमाज पढ़ते समय चुप रहना चाहिए। सामूहिक नमाज के दौरान, जब लोग नमाज पढ़ रहे हों तो बहुत शोर नहीं करना चाहिए, फिर भी नमाज के दौरान कभी-कभी लोग बाते करते रहते हैं! यदि संभव हो तो बच्चों को नमाज में अपने माता-पिता के पास रहने के लिए सिखाना चाहिए, या यदि ऐसा न हो, तो उन्हें मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए नहीं लाना चाहिए।

9. मुसलमान को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले दूसरे लोगों का ध्यान नहीं भटकाना चाहिए, क्योंकि नमाज़ पढ़ने वाला व्यक्ति अल्लाह के संपर्क में होता है। ध्यान भटकाना एक काफी गंभीर मामला है - क़ुरआन को जोर से पढ़ कर या कोई अन्य कार्यों से लोगों को परेशान नहीं करना चाहिए।

10. जो व्यक्ति मिस्जिद में प्रवेश करता है तो उसे तब तक नहीं बैठना चाहिए जब तक कि वह दो रकअत न पढ़ ले। इन दो रकातो को वैसे ही पढ़ना चाहिए जैसे आप अनिवार्य फज्र की नमाज के दो रकअत पढ़ते हैं। दो रकअत नमाज पढ़ने का कारण है कि बैठने से पहले मस्जिद का सम्मान करना। पैगंबर ने कहा:

"जब आप में से कोई मस्जिद में प्रवेश करे, तो उसे बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़नी चाहिए।" (???? ??-??????, ???? ???????)

11. यदि कोई व्यक्ति अकेले नमाज पढ़ रहा है (वैकल्पिक प्रार्थना या अनिवार्य प्रार्थना), तो उसे नमाज पढ़ने के दौरान अपने और आने जाने वाले लोगो के बीच आड़ के लिए सामने कुछ रखना चाहिए। यह एक कुर्सी, दीवार या कोई स्तंभ हो सकता है। उसे भी इसके थोड़ा करीब आना चाहिए जैसा कि पैगंबर करते थे। पैगंबर मुहम्मद ने कहा:

"यदि आप नमाज पढ़ते हैं, तो एक सूत्रह (आड़) की ओर नमाज पढ़ें और उसके करीब पहुंचें।" (अबू दाऊद)

समूह में नमाज़ पढ़ते समय व्यक्ति को आड़ करने की आवश्यक नहीं है, सिर्फ इमाम के आगे आड़ होना चाहिए जो अन्य लोगो के लिए भी आड़ की तरह काम करेगा।

12. मुसलमानों को नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति के सामने से नहीं गुजरना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति एक सूत्रह (आड़) के साथ प्रार्थना कर रहा है, मान लीजिए कि एक कुर्सी के पीछे, तो आप व्यक्ति और कुर्सी के बीच से नहीं गुजर सकते, लेकिन कुर्सी के आगे से जा सकते हैं। पैगंबर मुहम्मद ने कहा: "यदि कोई नमाज पढ़ने वाले के सामने गुजरने का पाप जानता, तो वह उसके सामने से गुजरने के बजाय चालीस प्रतीक्षा करता।" हदीस बताने वाले में से एक अबू अल-नादर ने कहा: "मुझे ठीक से याद नहीं है कि उन्होंने चालीस दिन, महीने या साल कहा था।" (बुखारी, मुस्लिम)

13. मस्जिद में जहां जगह मिल जाये वहीं बैठ जाना चाहिए। मुसलमान को व्यक्ति के ऊपर से कूद कर नहीं जाना चाहिए या पहले से बैठे दो लोगों के बीच से हो कर नहीं जाना चाहिए ताकि उन्हें परेशानी या नुकसान न पहुंचे। पैगंबर के कई हदीस इस अर्थ को व्यक्त करते हैं।

14. बाते करने और गपशप करने के बजाय, एक मुसलमान के लिए बेहतर है कि वह खुद को दुआ और अल्लाह की याद में व्यस्त रखे, क्योंकि जब तक वह नमाज़ का इंतज़ार कर रहा होता है उसे नमाज़ में माना जाता है।

15. मुसलमान को चाहिए कि वह मस्जिद को साफ सुथरा और सुगन्धित रखे क्योंकि यह अल्लाह का घर है। पैगंबर ने मस्जिद में थूकना एक पाप माना, जिसे तभी माफ किया जा सकता है जब मुसलमान थूकने वाली जगह को साफ कर दे। इस्लाम के पैगंबर ने कहा:

“मस्जिद में थूकना पाप है और इसका पश्चाताप उसे साफ करना है।" (???? ???????)

पैगंबर के साथी मस्जिद को साफ रखते थे, जैसे प्रसिद्ध साथी इब्न उमर मस्जिद के अंदर इत्र डालते थे जब उनके पिता उमर शुक्रवार का उपदेश देने के लिए उपदेश-मंच पर बैठते थे (अबू दाऊद)।

पारंपरिक अगरबत्ती या आधुनिक समय का स्प्रे और बिजली के उपकरणों का उपयोग इस उद्देश्य के लिए किया जा सकता है।

16. अज़ान होने के बाद मुसलमान को अन्य मुसलमानों के साथ समूह मे नमाज पढ़े बिना मस्जिद से बाहर नहीं आना चाहिए। उदाहरण के लिए, मान लें कि आपने घर पर या किसी अन्य मस्जिद में पहले जुहर की नमाज़ पढ़ ली, फिर आप किसी अन्य मस्जिद में जाते हैं जहां जुहर की अज़ान हो जाए। यह एक नफ़्ल (अतिरिक्त/वैकल्पिक) नमाज मानी जाएगी, भले ही आप इसे समूह में पढ़ें। आपका इरादा नफ़्ल नमाज़ का होगा, जबकि अन्य इसे अनिवार्य जुहर की नमाज़ के इरादे से पढ़ेंगे।

17. अज़ान को सुनना और पुकारने वाले के बाद उसे दोहराना उचित है। सब कुछ दोहराएं, सिवाय इसके कि जब वह कहे:

"*????? '???-????*" (आओ नमाज की ओर) और

"*????? ???-????*" (आओ कामयाबी की ओर)।

यहां आपको कहना चाहिए: "ला हवला व ला कुव्वता 'इल्ला बल्लिाह" (अल्लाह के अलावा कोई शक्तिशाली नही है और कोई ताकत नही है)। (बुखारी, मुस्लिम)

अज़ान को दोहराना एक पुरस्कृत कार्य है, हालांकि यह वैकल्पिक है।

18. मुसलमान को मस्जिद से बाहर निकलते समय पहले अपना बायां पैर निकालना चाहिए और वह कहना चाहिए जो पैगंबर मुहम्मद कहते थे:

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलुका मिन फज़्लिका।"

"ऐ अल्लाह, मैं आपकी कृपा चाहता हूं।" (*???? ???????*)

यह प्रार्थना वैकल्पिक है, हालांकि इसे पढ़ना एक पुरस्कृत कार्य है।

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।